8

संसार की सबसे बड़ी चीज़

(1 कुरिन्थियों 13)

बदला हुआ जीवन प्रेम का जीवन है।

एक गीत के बोल हैं, ''संसार की सबसे बड़ी ज़रूरत है अब प्रेम, हां मीठा प्रेम। केवल यही चीज़ है जिसकी बहुत कमी है।'' हम इससे सहमत होंगे। पहाड़ और तराइयां और खेत तो बहुत हैं; मकान और कारें और सड़कें और शॉपिंग मॉल बहुत हैं; फ्रिज और वाशिंग मशीनें और डिश वाशर जैसे समान बहुत हैं; अपराध और झूठ बोलना और चोरी करना और बेवफ़ाई बहुत है। परन्तु प्रेम बहुत कम है! मसीही व्यक्ति के लिए पर्याप्त प्रेम कभी नहीं हो सकता क्योंकि प्रेम संसार की सबसे बड़ी चीज़ है! 1 कुरिन्थियों 13 में जो प्रेम पर बड़ा अध्याय है पौलुस यही बात कहता है।

अध्याय 12 में पौलुस पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म के दानों की चर्चा कर रहा है। उस अध्याय को वह यह कहते हुए समाप्त करता है, ''परन्तु मैं तुम्हें और भी सबसे उत्तम मार्ग बताता हूं।'' वह ''और भी उत्तम मार्ग'' प्रेम का मार्ग है। आश्चर्यकर्म के दान तो बड़े थे ही पर प्रेम उन से भी बड़ा है! एक अर्थ में पौलसु यह सुझाव देता है कि प्रेम केवल बड़ा ही नहीं बल्कि यह तीन कारणों से ''सबसे बड़ा'' है:

प्रेम संसार की सबसे बड़ी चीज़ है क्योंकि बिना इसके कोई चीज़ किसी काम की नहीं (1 कुरिन्थियों 13:1-3)

उस व्यक्ति की कल्पना करें जिसका वर्णन इन आयतों में किया है। वह व्यक्ति भावपूर्ण ढंग से बोल सकता है। उसे पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म के दान मिले हैं। उसे भविष्यवाणी का दान मिला है; वह भेदों को समझता है; उसे आश्चर्यकर्म से ज्ञान मिला है। वह विश्वासी बल्कि बड़ा विश्वासी है, उसका विश्वास इतना है कि वह पहाड़ों को हिला सकता है और वह उदारता से दान देता है; वह अपना सब कुछ दे देता है। अन्त में वह आत्मबलिदान करने वाला है यानी वह अपना शरीर जलने के लिए दे देता है।

ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें जो भावपूर्ण ढंग से बोलता है, उसका दान मिला है, वह ज्ञानी है; बड़े विश्वास वाला है; ऐसा व्यक्ति जो सब कुछ दे देता है और फिर अपने आपको भी दे देता है! उसके लिए हम कहना चाहेंगे कि कितना ज़बर्दस्त आदमी है! कितना बड़ा मसीही है! परन्तु इस आदमी की एक बात और है कि वह दूसरों से प्रेम नहीं करता! तो फिर पौलुस उसके बारे में क्या कहता है? उसका प्रचार कराना और शिक्षा देना व्यर्थ है क्योंकि वह ''ठंठनाता हुआ पीतल और झंनझनाती हुई झांज है'' यानी वह वह प्राप्त नहीं करता। वह कुछ नहीं है! और उसके

भलाई के सब काम उसे कुछ नहीं देते! ऐसे व्यक्ति को देखकर हम कहते हैं, ''क्या वह कुछ नहीं है!'' ऐसे व्यक्ति को देखकर हम कहते हैं कि क्या वह कुछ है। परमेश्वर कहता है, ''वह कुछ नहीं है!''

प्रेम के बिना आप का कोई भी काम किसी काम का नहीं है। आप भावुकता से बोल सकते हैं, आपको दान मिला हो सकता है, आप ज्ञानी हो सकते हैं और विश्वासी हो सकते हैं। परन्तु बिना प्रेम के कुछ प्राप्त नहीं होता और आप कुछ नहीं हैं। आप परोपकारी और आत्मबलिदान करने वाले हो सकते हैं; आप सब कुछ यहां तक कि अपने आपको देने वाले हो सकते हैं। परन्तु यदि आप यह गलत उद्देश्य से करते हैं, प्रेम से नहीं तो आपको कुछ लाभ नहीं होने वाला। बिना प्रेम के, और कोई चीज़ किसी काम की नहीं। आप आश्चर्यकर्म के दानों के बारे में चाहे वह अकेले हों या सामूहिक ऐसा नहीं कह सकते। न ही आप किसी और चीज़ के लिए ऐसा कह सकते हैं। इस कारण प्रेम संसार की सबसे बड़ी चीज़ है!

प्रेम संसार की सबसे बड़ी चीज़ है क्योंकि इसमें बहुत सी अन्य खुबियां हैं (1 कुरिन्थियों 13:4-7)

प्रेम की इस विशेषताओं की सूची को पढ़कर हमें कई बातों का पता चलता है।

हमें पता चलता है कि प्रेम आश्चर्यकर्म के दानों से बड़ा क्यों है

इस वालो के द्वारा दो कारण बताए गए हैं कि प्रेम पहली सदी के आश्चर्यकर्मों के दानों से बढ़कर कैसे है।

प्रेम एक बात के लिए बड़ा है, क्योंकि इसमें मसीही व्यक्ति के जीवन की खूबियां बनती हैं जो आश्चर्यकर्म के दानों से नहीं बन सकती। पौलुस ने कहा कि प्रेम धीरजवंत और दयालु है, न कि ईर्ष्यालू या घमण्डी या नि:स्वार्थ, आदि। परन्तु आप आत्मा के किसी आश्चर्यकर्म के दान के बारे में या एक सिस्टके रूप में आश्चर्यकर्मों के दानों के बारे में ऐसा नहीं कह सकते।

प्रेम एक और बात के लिए बड़ा है क्योंकि आश्चर्यकर्म के दान कुरिन्थुस की कलीसिया की समस्याओं में से एक थे, परन्तु प्रेम उस सब का समाधान है। आश्चर्यकर्म के दानों से झगड़ा हो गया था। अध्याय 12 और 14 से हमें पता चलता है कि कुरिन्थी लोग इस पर बहस कर रहे थे कि सबसे बड़ा दान कौन सा है। कुछ लोग जिन्हें वह मिला था जिसे बढ़िया दान मानते थे उससे अपने से कम माने जाने वाले दानों को पाने वालों को नीचा देखते थे। जिनके पास वह था जो उन्हें लगता था कि घटिया दान है वे उन्हें अनावश्यक मानते थे। इसके अलावा कुरिन्थुस की कलीसिया में आश्यर्चकर्म के दानों की भरमार होने के बावजूद यह हर प्रकार की आत्मिक समस्याओं से घिरी हुई थी। आत्मा के आश्चर्यकर्म के दान उनकी आत्मिक समस्याओं को सुलझा नहीं पाए, परन्तु प्रेम सुलझा सकता था!

प्रेम उनकी समस्याओं का समाधान कर सकता था, उदाहरण के लिए क्योंकि यदि कुरिन्थुस के मसीही ईष्यालु या घमण्डी न हों तो उनके दानों में पाए जाने वाले अन्तर से उनके बीच कोई फर्क नहीं पड़ना था। यदि वे नि:स्वार्थ होते यानी वे एक दूसरे को मानते न कि अपनी इच्छाओं को, जब वे यह विचार करते थे कि मूर्तों के आगे चढ़ाया गया मास खाना है या नहीं। परन्तु

यदि वे बुराई से आनन्दित न होते, बल्कि सही कामों से आनन्दित होते तो उन्होंने कलीसिया में पाप को सहन नहीं करना था। यदि वे धीरजवंत और दयालु होते और चिढ़ाने वाले या क्रोध दिलाने वाले न होते तो कलीसिया की टुटने की समस्या सुन सकती थी। अन्य शब्दों में प्रेम से वे समस्याएं सुलझ जानी थी जिन्हें आश्चर्यकर्म के दानों ने बढ़ाया ही था।

हमें पता चलता है कि नये नियम के प्रेम का क्या अर्थ है

''प्रेम'' शब्द का इस्तेमाल हम बहुत तरह से करते हैं: हम उतने ही जोश से: मैं अपनी पत्नी से प्रेम करता हूं''; ''मैं अपने मित्रों से प्रेम करता हूं;'' ''मैं अपने कुत्ते से प्रेम करता हूं;'' ''मैं अपने देश से प्रेम करता हूं;'' ''मैं एपल पाई से प्रेम करता हूं'' कहते हैं। परन्तु हर जगह प्रेम कहने का हमारा अर्थ भावना या जज़बात होता है।

इसके विपरीत 1 कुरिन्थियों 13 में ''प्रेम'' के लिए इस्तेमाल हुआ शब्द यदि उसके साथ कुछ भावुक बात है भी तो बहुत कम, दो यूनानी शब्द *agape* है। अगापे मुख्तया भावना या जज़बात नहीं है। इस तथ्य को दिखाने का एक तरीका यह याद रखना है कि हमें प्रेम करने की आज्ञा दी गई है। परन्तु भावना की आज्ञा नहीं दी जा सकती। आज्ञाएं इच्छा के लिए होती हैं। इस प्रकार जो प्रेम हमें रखना है वह भावनात्मक नहीं बल्कि कुछ ऐसा है जिसे करने की हम इच्छा कर सकते हैं। हम प्रेम करते हैं या नहीं इसका सम्बन्ध भावना से नहीं बल्कि इच्छा से है इसलिए अगापे का अर्थ ठानी हुई भली इच्छा जैसी बात जैसी बात यानी जिससे आप प्रेम करते हैं उसके लिए भलाई करने का निश्चय है।

सो ''प्रेम'' का अर्थ दूसरों के लिए कुछ *भावना* ही नहीं बल्कि इसका अर्थ प्रेम पूर्वक ढंग से दूसरों के प्रति *काम करना* है। इसका अर्थ घमण्डी, अक्खड़, चिड़चिड़ा होने से इनकार करते हुए निस्वार्थ, उनके साथ धीरजवंत, दयालु होना, निस्वार्थ होकर काम करना है। इस अर्थ में हम हम उन से भी प्रेम कर सकते हैं जिन्हें हो सकता है हम पसन्द न करते हों। हम दूसरों की बेहतरी की इच्छा कर सकते हैं, दूसरों के प्रति प्रेम पूर्वक कार्य कर सकते हैं, दूसरों के साथ सही व्यवहार कर सकते हैं, तब भी यदि हम उनकी देख भाल न करें, या उनके लिए किसी प्रकार का लगाव न महसूस कर सकें।

हमें पता चलता है कि यदि हम प्रेम करें तो हम कैसे कार्य करेंगे

यदि हम प्रेम करें, *तो हम धीरजवंत होंगे*; हम दूसरों से प्रेम करने में धीरज करने वाले होंगे। *हम दयालु भी होंगे;* हम दूसरों की भावनाओं की कदर करने वाले होंगे और जो कुछ उनके जीवन का आसान करने के लिए आवश्यक होगा हम वह करने की कोशिश करेंगे।

यदि हम प्रेम करते हैं तो *हम ईर्ष्या नहीं करेंगे*। उदाहरण के लिए जब किसी के पास वह हो जो हमें लगता है कि हम से बेहतर दान है या जब किसी को तारीफ़ या तरक्की या ईनाम मिलता है जो हमें लगता है कि हम उसके योग्य हैं। अपने दानों पर *हम घमण्ड भी नहीं करेंगे*। उदाहरण के लिए हम अपने आप से और अपनी महानता से और अपनी योग्यताओं से इतना नहीं भर जाएंगे कि हम दूसरों के सामने शेखी मारने लगें। *हम घमण्डी नहीं होंगे,* यानी अभिमानी, गर्व से फूलने वाले या घमण्ड से भरे; हम अपने आपको दूसरों पर नहीं मानेंगे।

यदि हम प्रेम करते हैं, *तो हम कठोर* नहीं होगे; एक संस्करण में कहा गया है कि इसका अर्थ है कि प्रेम लोभी है। *न हम अपने तरीके पर ज़िद करेंगे;* शायद अन्य किसी भी बात से प्रेम निष्वार्थ है।

यदि हम प्रेम करते हैं तो हम चिड़चिड़े नहीं होंगे; KJV कहता है कि ''प्रेम आसानी से चिड़ता नहीं।'' जब हम वैसे प्रेम करते हैं जैसे प्रेम करना चाहिए तो हम अपने कंधे के ऊपर चिप नहीं लगाते, केवल इस प्रतीक्षा में कि कोई इसे उतार दे। न हम अपनी बाजू पर भावनाएं लगाते हैं ताकि हम उन्हें आहत करते रहें। न हम क्रोधी होंगे; एक संस्करण में इसका अनुवाद है: ''प्रेम गलतियों का हिसाब नहीं रखता।''

यदि हम प्रेम करते हैं तो हम बुराई से आनन्दित नहीं होंगे। हम बुराई के विजयी होने पर प्रसन्न नहीं होंगे, चाहे हमारे शत्रुओं के साथ ही कुछ बुरा क्यों न हुआ हो। इसके बजाय *हम* अच्छाई में आनन्दित होंगे; जब भी अच्छाई होती है या जहां भी अच्छाई होती है, चाहे ये उनके द्वारा की जाए जो हमारे शत्रु हैं, पर हम इसमें आनन्दित होंगे।

यदि हम सचमुच प्रेम करते हैं तो *हमारा प्रेम सब बातों को सह लेता है*। हम चाहे कितनी भी दिक्कते आ जाएं, प्रेम करना जारी रखेंगे। *हमारा प्रेम सब बातों में विश्वास करता है।* प्रेम संदेह नहीं करता, एक संस्करण में कहा गया है। *प्रम सब बातों की आशा करता है।* हम दूसरों की भलाई की ही उम्मीद करेंगे और चीज़ों के बेहतर होने की राह देखेंगे। और *हमारा प्रेम सब बातों को सह लेता है*। हम तब भी प्रेम करना नहीं छोड़ेंगे जब हम पर सताव हो या हम से घृणा की जाए।

क्या आप वैसे प्रेम करते हैं जैसे आपको करना चाहिए? यदि हां तो आपके व्यवहार में धीरज, दयालुता, शिष्टाचार, निस्वार्थ, भलाई आदि दिखाई देंगे। बेशक कोई मनुष्य सिद्धता से प्रेम नहीं करता। जब हम इन गुणों को पाने के लिए काम करते हुए प्रेम की इस किसम में बढ़ते हैं। परन्तु जब हम बड़े हो जाते हैं, तो हम ऐसे ही लगते हैं।

अच्छी तरह समझने के लिए मैं वह करता हूं जो मैंने शायद तीस साल पहले एक प्रचारक को करते सुना था। उसने कहा कि बाइबल कहती है कि परमेश्वर प्रेम है इसलिए आप इन आयतों में जहां जहां ''प्रेम'' शब्द है वहां ''परमेश्वर'' लगा लो। आप इससे पढ़ सकते हैं: ''परमेश्वर धीरजवंत है, और दयालु है; परमेश्वर डाह नहीं करता; परमेश्वर अपनी बढ़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, ...'' मसीह हमें दिखाता है कि परमेश्वर कैसा है और पृथ्वी पर रहते समय उसने प्रेम का जीवन जीया, इसलिए आप इस आयत को ''प्रेम'' शब्द की जगह ''मसीह'' लगाकर पढ़ सकते हैं: ''मसीह धीरजवंत है, और दयालु है; मसीह डाह नहीं करता; मसीह अपनी बढ़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, ...।''

परन्तु मसीही लोग मसीह का अनुसरण करने वाले हैं। सो आप इसे इस प्रकार भी पढ़ सकते हैं: ''मसीही धीरजवन्त है, और दयालु है; मसीही डाह नहीं करता; मसीही अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।''

परन्तु इसका क्या अर्थ है कि परन्तु हर कोई ऐसा ही हो। इसलिए इसे दोबारा पढ़ते हैं और ''मसीही'' शब्द की जगह जातिवाचक सर्वनाम ''मैं'' लगाते हैं। ''मैं धीरजवंत हूं, और दयालु हूं; मैं डाह नहीं करता; मैं अपनी बढ़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, अनरीति नहीं चलता, मैं अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता, कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता हूं। मैं सब बातें सह लेता हूं, सब बातों की प्रतीति करता हूं, सब बातों की आशा रखता हूं, सब बातों में धीरज धरता हूं।'' मुझे यह बहुत ही दीन करने वाला अनुभव लगता है। मैं इस विवरण से बहुत छोटा हूं। आप? कहने का अर्थ यह है कि हम अब चाहे कितने भी छोटे क्यों न पड़ें पर हमें ऐसे लोग बनने की कोशिश करनी चाहिए।

प्रेम संसार की सबसे बड़ी चीज़ है क्योंकि प्रेम कभी टलता नहीं (1 कुरिन्थियों 13:8-13)

''प्रेम कभी टलता नहीं!'' यह एक कारण है कि प्रेम संसार की सबसे बड़ी चीज़ है!

यह प्रेम को आत्मिक दानों से अलग करता है। 1 कुरिन्थियों 12:8-10 में पौलुस ने नौ अलग अलग दानों की बात की है। 1 कुरिन्थियों 13:8 में वह इन में से तीन की बात करता है और विशेष रूप से यह कि ये तीनों टल जाएंगे। मेरा मानना है कि ये तीनों दान सभी नौ दानों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब पौलुस कहता है कि तीनों दान मिट जाएंगे तो वह यह कह रहा है कि सभी नौ दान मिट जाएंगे। आश्चर्यकर्मों कहता है कि पूरा प्रबन्ध किया जाएगा। परन्तु प्रेम बना रहेगा!

वे आश्चर्यकर्म के दान कब मिट जाएंगे। पौलुस परिपक्वता की बात करता है। दानों का सम्बन्ध अधूरा (1 कुरिन्थियों 13:9) या अपरिपक्व के साथ था। परन्तु अपरिपक्वकता का वह समय ''सिद्ध'' अर्थात परिपक्वता के आने पर खत्म हो जाना था (1 कुरिन्थियों 13:10)। आश्चर्यकर्मों के दानों का प्रबन्ध बचपन के भोलेपन जैसा है (1 कुरिन्थियों 13:11)। परन्तु प्रौढ़ता आने पर जैसे आदमी बढ़ा होने पर बचपन की बातें छोड़ देता है, यह भी छूट जाता है (1 कुरिन्थियों 13:11)। आश्चर्यकर्मों के दानों का प्रबन्ध दर्पण में देखने की तरह है जो आपको स्पष्ट आकृति नहीं देता। परन्तु परिपक्वता का समय अपने आपको दर्पण में साफ़ साफ़ देखने जैसा होगा (1 कुरिन्थियों 13:12)। अपरिपक्वता का समय-आत्मा के आश्चर्यकर्मों के दानों के इस्तेमाल के समय-केवल कुछ समझ का समय था; जिसमें परिपक्वता का समय पूरी समझ का समय होगा (1 कुरिन्थियों 13:12)।

परिपक्वता का वह समय कब आएगा? कइयों का मानना है कि यह मसीह की वापसी के समय आएगा। वे मानते हैं कि आयत 10 में ''जब सर्वसिद्ध आएगा'' का संकेत मसीह की ओर है। यानी यह कह रहा है कि ''जब मसीह वापस आएगा।'' इस वाख्या में कई दिक्कते हैं, परन्तु एक दिक्कत यह है कि यह शब्द अकर्मक है। मूल में यह कहता है, ''जब सिद्ध *वस्तु आएगी,*'' कम से कम कहें तो यह लगता नहीं है कि पौलुस मसीह को एक अकर्मक यानी नपुंसक अर्थ में वस्तु के रूप में कहे! एक और दिक्कत यह है कि इस संदर्भ में पौलुस आश्चर्यकर्म के दानों की अपर्याप्तता को दिखाने की कोशिश कर रहा है। यदि उसने कहा कि आश्चर्यकर्म के दानों का पूरा प्रबन्ध मसीह के द्वितीय आगमन तक रहेगा तो उसका उद्देश्य पूरा न होता! इससे कुरिन्थुस

के लोगों को क्या फर्क पड़ता यदि आश्चर्यकर्मों के दान द्वितीय आगमन तक रहते या न रहते; इस जीवन में उन्हें ऐसे दानों में केवल दिलचस्पी थी। उन्हें यह सुनना अच्छा लगता कि वे दान तब तक रहेंगे। मुझे यकीन है कि पौलुस ने कहा नहीं होगा: ''मैं तुम्हें दिखाता हूं कि तुम उन दानों पर निर्भर रहकर कितने मूर्ख हो। क्योंकि एक बात तो है कि वे अगले दो हज़ार साल तक या मसीह के आगमन तक ही रहेंगे!'' इन दो कारणों से पौलुस मसीह की वापसी की बात नहीं कर सकता था।

तो फिर पौलुस किसकी बात कर रहा है? कलीसिया की परिपक्वता की! कलीसिया नवजात थी यानी यह एक बच्चे की तरह थी। कलीसिया को अपने बचपन में से निकलने के लिए आश्चर्यकर्म के दानों की आवश्यकता थी। परन्तु जब यह उस बचपन में से गुज़री और परमेश्वर का सारा प्रकाशन इसे मिल गया, तो इसे आश्चर्यकर्म के दानों की आवश्यकता नहीं होनी थी। इसलिए ''जब सर्वसिद्ध आएगा'' का अर्थ कलीसिया की प्रौढ़ता है।

परन्तु यहां याद रखने वाली बात यह है कि पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म के दानों ने तो खत्म हो जाना था। पर कलीसिया के प्रौढ़ होने के बावजूद प्रेम ने बने रहना था!

परन्तु 1 कुरिन्थियों का अन्तिम भाग भी प्रेम को विश्वास और आशा से अलग करता है। ध्यान दें कि ''प्रेम कभी टलता नहीं!'' फिर वह कहता है कि आश्चर्यकर्म के दान जाते रहेंगे और अन्त में वह कहता है: ''पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं।'' पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्मों के दान जाते रहेंगे परन्तु तीन बातें स्थाई हैं या रह जाएंगी और वह विश्वास, आशा और प्रेम है! इन आश्चर्यकर्म के दानों के जाने के बाद, विश्वास, आशा और प्रेम फिर भी रहेगा। इसलिए विश्वास, आशा और प्रेम आत्मा के आश्चर्यकर्म के दानों से सबसे बढ़िया है।

फिर पौलुस कहता है: ''पर इनमें सबसे बड़ा प्रेम है।'' प्रेम को विश्वास और आशा से बड़ा क्यों कहा गया है? इसके कई उत्तर हो सकते हैं। संदर्भ में मैं यह कहने का कि प्रेम विश्वास और आशा से बड़ा है सबसे बढ़िया कारण यही दूंगा कि प्रेम विश्वास और आशा के बाद भी रहेगा।

मसीह के वापस आने पर विश्वास और आशा तो जाते रहेंगे। हम उसे रू-ब-रू देख लेंगे जिस पर हम ने विश्वास किया है; इसका अर्थ यह है कि तब विश्वास नहीं रहेगा, क्योंकि विश्वास में ''अनदेखा'' शामिल है और यह ''देखने'' से अलग है। (देखें इब्रानियों 11:1; 2 कुरिन्थियों 5:7.) इसके अलावा मसीह के वापस आने पर आशा भी पूरी हो जाएगी। एक बार वह मिल जाने पर जिसकी हमें आशा है, आशा जाती रहेगी। परन्तु मसीह के आने पर प्रेम नहीं टलेगा। तब और अनन्तकाल तक हम परमेश्वर, पवित्र लोगों से प्रेम करते रहेंगे और परमेश्वर तथा अन्य लोगों द्वारा हम से प्रेम किया जाता रहेगा। हमारे लिए प्रेम तब और सदा के लिए वैसे ही बहुमूल्य होगा जैसे आज है। मसीह के आने से विश्वास और आशा तो जाते रहेंगे पर प्रेम बना रहेगा। इसलिए विश्वास और आशा तो बड़े हैं, पर प्रेम उनसे भी बड़ा है। प्रेम संसार की सबसे बड़ी चीज़ है।

सारांश

1 कुरिन्थियों 13 में पौलुस का संदेश यह है कि प्रेम संसार में सबसे बड़ी चीज़ है। स्वाल है कि क्या प्रेम हमारे लिए सबसे बड़ी चीज़ है?

क्या प्रेम कलीसिया के लिए सबसे बड़ी चीज़ है ? क्या कलीसिया प्रेम पर प्रयास ज़ोर देती है ? या क्या हम इस विषय को नज़रअन्दाज़ करते हैं क्योंकि हमें लगता है कि दूसरे लोग इस पर बहुत प्रचार करते हैं ? यदि हम प्रचार करने में इसे नज़रअन्दाज़ नहीं करते तो क्या हम व्यवहार में लाने में इसे नज़रअन्दाज़ करते हैं ? क्या हमारी पहचान प्रेमी, अपने पन वाली सहभागिता, एक दूसरे की चिंता, और दूसरों की चिंता करने वालों के रूप में है ? हमें ऐसे होना चाहिए।

क्या प्रेम हमारे जीवनों में सबसे बड़ी बात है ? लोग सच्चाई, पवित्र शास्त्र, पवित्र शास्त्र के अहंकार और अविश्वासियों के तर्कों को नष्ट करने के योग्य होने को समर्पित हो सकते हैं; परन्तु बिना प्रेम के। हमें मसीही लोगों की आवश्यकता है जो सीखने में बड़े, सच्चाई के महारथी, विश्वास और शुद्धता के नायक हों। परन्तु हमें उन मसीही लोगों की भी आवश्यकता है जो प्रेम में भी बड़े हों! क्या हमारे पास वे हैं ? इससे भी बढ़कर क्या आपने 1 कुरिन्थियों 13 में वर्णित प्रेम के ढंग से प्रेम करने वाला व्यक्ति बनने के उद्देश्य की प्राथमिकताओं की अपनी सूची में ऊपर इसे रखा है ?

बेशक प्रेम सबसे पहले परमेश्वर के लिए होना चाहिए। पहली आज्ञा परमेश्वर से प्रेम करने की ही है। यदि आप उससे प्रेम करते हैं तो आप उसकी आज्ञाओं को भी मानेंगे।